



तेरा राज्य आए  
नोवीना

# ईश्वर हमारे साथ है

कैंटरबरी के आर्चबिशप  
सारा मुल्लाली



तेरा राज्यआए  
नोवीना



तेरा राज्य आए  
नोवीना

# ईश्वर हमारे साथ है

Thy Kingdom Come: Novena  
(Written by Archbishop of Canterbury Sarah Mullally)  
Copyright © 2026 Thy Kingdom Come.  
Used with permission. All rights reserved worldwide.

Scripture quotations taken from The Holy Bible, New International Version® NIV®  
Copyright © 1973, 1978, 1984, 2011 by Biblica, Inc.  
Used with permission. All rights reserved worldwide.

Cover photo: Sarah Hu (unsplash.com)  
Photography provided by unsplash.com and stock.adobe.com.  
Photos used with permission.

कैंटरबरी के आर्चबिशप  
सारा मुल्लाली

# परचिय

## प्रेरितियों 1:14

ये सब कई सूत्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ एक चर्च होकर प्रार्थना में लगे रहे।

चर्च की शुरुआत से ही, एसेन्शन और पेंटेकोस्ट के बीच के ये नौ दिन नौ दविसीय प्रार्थना (नोवीना) प्रार्थना का समय रहा है। और केवल व्यक्तिगत प्रार्थना ही नहीं, बल्कि एक समुदाय के रूप में, जैसे कि चर्च के पहले सदस्य थे।

और यही तेरे राज्य का उद्देश्य है। आओ, क्योंकि यह हमें प्रार्थना में एकजुट करता है – 172 देशों में दस लाख से अधिक ईसाई और 85 से अधिक संप्रदाय और परंपराएं।

इस वर्ष का वषिय है 'ईश्वर हमारे साथ है', और किस प्रकार पवत्रि आत्मा संसार में कार्यरत है। और हमेशा की तरह, इसके केंद्र में पाँच के लिए प्रार्थना है, क्योंकि हम अपने पाँच मत्तियों, परिवार के सदस्यों, पड़ोसियों, या सहकर्मियों के लिए प्रार्थना करते हैं जो अभी तक मसीह का अनुसरण नहीं करते हैं, कवि भी उसे उसी तरह जान सकें जैसे हम जानते हैं।

उस पहली नौ दविसीय प्रार्थना में, प्रेरितियों ने परमेश्वर से यह प्रार्थना नहीं की कि वह सुसमाचार को संसार में ले जाए। उन्होंने पवत्रि आत्मा के आगमन के लिए प्रार्थना की, कि वह उन्हें बदल दे और उन्हें बाहर जाकर सुसमाचार

साझा करने की शक्ति दें।

और इस वर्ष की नौ दविसीय प्रार्थना भी इसी वषिय पर आधारित होगी।

क्योंकि प्रार्थना केवल ईश्वर से दुनिया बदलने की वनिती करने के बारे में नहीं है। मुझे यह अहसास हुआ है कि यह ईश्वर से हमें बदलने की वनिती करने के बारे में भी है।

प्रार्थना ही प्रार्थना को आकार देती है। ईश्वर हमें नया रूप देता है, जैसे कुम्हार मट्टी को नया आकार देता है, हमें अपने स्वरूप के सच्चे प्रतबिबि में ढालता है। "जैसे कुम्हार के हाथ में मट्टी होती है, वैसे ही तुम मेरे हाथ में हो" (यर्मयाह 18:6)।

और, जैसा कि हम आगे के पाठों में देखेंगे, ईश्वर हमें ऐसे लोगों में बदलना चाहता है जो दुनिया में वे बदलाव ला सकें जो हम देखना चाहते हैं।

क्योंकि, अगर हम सचमुच अपनी प्रार्थनाओं को दिल से करते हैं, तो उनके साथ-साथ काम करना भी जरूरी है—ठीक वैसे ही, जैसे पेंटेकोस्ट के बाद पवत्रि आत्मा से शक्ति पाकर प्रेरित तुरंत काम में जुट गए थे। अगर हम सचमुच यह चाहते हैं कि हमारे

'पाँच' लोग ईश्वर का अनुभव करें, तो यह हमारे ज़रिए ही क्यों न हो?

नहीं है  
सविय तुम्हारे

ईश्वर की कृपा से, हमारे पास अपनी प्रार्थना का उत्तर बनने की संभावना है।

हम जरूरतमंदों के लिए मसीह के हाथ बन सकते हैं।

यह वैसा ही है जैसा टेरेसा ऑफ एवलिना ने लिखा था:

*'ईसा मसीह का कोई शरीर नहीं है सविय तुम्हारे,*

*पृथ्वी पर उसके कोई हाथ-पैर नहीं हैं सविय तुम्हारे।'*

*तुम्हारी ही वो आँखें हैं जिनसे वो*

*इस संसार पर करुणा की दृष्टि डालता है।*

*तुम्हारे ही वे पैर हैं जिनसे वह*

*भलाई के लिए चलता है।*

*तुम्हारे ही हाथ हैं, जिनसे वह*

*सारे संसार को आशीर्वाद देता है।*

*इस धरती पर ईसा मसीह का कोई शरीर*

और इसलिए, इस नौ दविसीय प्रार्थना में, हम प्रार्थना करेंगे कि हम अपने पाँचों शिष्यों और ईश्वर के प्रेम के बीच मलिन बट्टि बनें, और वे हमारे माध्यम से ईश्वर को जान सकें।

लेकिन इस प्रक्रिया में हम यह भी पाएंगे कि हम भी पवत्रि आत्मा द्वारा रूपांतरित होंगे, और परमेश्वर की छवि के सच्चे प्रतबिबि में ढल जाएंगे।

*कैंटरबरी के आर्चबिशप,  
सारा मुल्लाली*

## पाँच के लिए प्रार्थना करें

1.

2.

3.

4.

5.



## असेंशन दविस वादे की भावना

### प्रेरितों 1:6-11

<sup>6</sup> अतः उन्होंने इकट्ठे होकर उससे पूछा, “हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा?” <sup>7</sup> उसने उनसे कहा, “उन समयों या कालों को जानना, जिनको पति ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। <sup>8</sup> परन्तु जब पवतिर आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।” <sup>9</sup> यह कहकर वह उन के देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छुपा लिया। <sup>10</sup> उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहनि हुए उन के पास आ खड़े हुए, <sup>11</sup> और उनसे कहा, “हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जसि रीतसे तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीतसे वह फरि आएगा।”

मुझे लगता है कि हम सभी कभी-कभी खुद को शक्तिहीन महसूस करते हैं। दुनिया को बदलने में शक्तिहीन, शायद यहाँ तक कि अपने जीवन में बदलाव लाने में भी शक्तिहीन जबकि दूसरों के साथ जीवन बदलने वाले सुसमाचार को साझा करने की तो बात ही छोड़ दें और इसलिए हम परमेश्वर से पूछते हैं, ‘आप इसके बारे में क्या करने वाले हैं? क्या आप अंततः राज्य को पुनर्स्थापित करने वाले हैं?’

और हमें नरिशाजनक उत्तर मिला है, ‘यह आपके जानने की बात नहीं है।’

लेकिन चाहे हम कतिना भी असहाय महसूस करें, अंधेरे में फंसे होने और कई अनश्चितताओं से घरि होने के बावजूद, हम धरती पर मसीह के अंतमि शब्दों से सांतवना पा सकते हैं। जब पवतिर आत्मा आप पर आता है, तो ‘आपको शक्तिप्राप्त होगी। और यह कोई साधारण शक्ति नहीं, बल्कि सुसमाचार को धरती के कोने-कोने तक फैलाने की शक्ति होगी।

आप सोच रहे होंगे, ‘मैं अब भी खुद को शक्तिहीन महसूस कर रहा हूँ, तो मैं कैसे जान सकता हूँ कि यह वादा सच था?’ तो, हमें आपसे आगे देखने की ज़रूरत नहीं है। आप, और इस नौ दक्वीय प्रार्थना के सभी

पाठक, जो दुनिया के हर कोने से, 172 से अधिक देशों से आते हैं। आप में, एंग्लिकन कम्युनियन में, सार्वभौमिक चर्च में, हम देख सकते हैं कि उनका वादा सच था, और यह सुसमाचार पृथ्वी के कोने-कोने तक पहुँच गया है। हमारे पूर्वजों को वास्तव में पवतिर आत्मा की शक्तिप्राप्त की गई थी, ताकि वे मसीह के साक्षी बनकर संसार के समक्ष उपस्थित हो सकें और इसलिए, हमें भी यह शक्ति प्राप्त है।

और यदि हमें पृथ्वी के छोर तक पहुँचने की शक्ति दी गई है, तो नश्चित रूप से हमें अपने ‘पाँच’ तक पहुँचने की शक्ति भी दी गई है।

तो आइए हम प्रार्थना करें कि हम अपने भीतर मौजूद पवतिर आत्मा की शक्ति को पहचान सकें, और चाहे ईश्वर ने कतिनी भी बातें अनजानी क्यो न रखी हों, हम उस शक्तिका उपयोग अपने ‘पाँच’ लोगों के साथ सुसमाचार साझा करने के लिए करें।



# आत्मा सृष्टिपर मंडराती है।

## उत्पत्ति 1:1-5

<sup>1</sup> आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।  
<sup>2</sup> पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।<sup>3</sup> जब परमेश्वर ने कहा, “उजयिला हो,” तो उजयिला हो गया।<sup>4</sup> और परमेश्वर ने उजयिले को देखा कि अच्छा है; और परमेश्वर ने उजयिले को अन्धियारे से अलग किया।<sup>5</sup> और परमेश्वर ने उजयिले को दिन और अन्धियारे को रात कहा। तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहला दिन हो गया।

मैं कल्पना करता हूँ, अपने मन में, सबसे गहरे अंधेरे की।

है, बल्कि एक ऐसा अंधकार जहाँ प्रकाश का कभी अस्तित्व ही नहीं रहा।

एक ऐसा अंधकार जो न केवल प्रकाश से अछूता

लेकिन उस अंधकार में भी – जो सबसे पूर्ण

अंधकार था, जब सचमुच इससे अधिक अंधकारमय कुछ नहीं हो सकता था – आशा थी आत्मा मौजूद थी, जल के ऊपर मंडरा रही थी।

जब भी मैं अंधकार में डूब जाता हूँ, तो मुझे यह जानकर सचची तसल्ली मिलती है कि ईश्वर शुरुआत से ही हमारे साथ था, और उसकी आत्मा आज भी हमारे साथ है, चाहे हमारी परस्थिति कैसी भी हो।

लेकिन कभी-कभी इस उपस्थिति को महसूस करना कठिन हो सकता है। ऐसे समय में, पवित्र आत्मा की उपस्थिति को दूसरों के माध्यम से ही सबसे अच्छी तरह महसूस किया जा सकता है।

जब मैं नर्स थी और पैलिटिवि केयर में काम करती थी, तब मैंने लोगों को सबसे गहरे अंधकार का अनुभव करते देखा, जब वे अपने जीवन के अचानक समाप्त होने के सदमे और शोक से जूझ रहे थे। मैंने पाया कि लोग हमेशा ऐसा समाधान नहीं मांगते थे जो कोई दे न सके – वे बस इतना चाहते थे कि कोई उनके साथ हो, उनके साथ मौजूद हो। न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि भावना से भी।

ईश्वर हमारे माध्यम से कार्य करता है – उसकी आत्मा को हमारे माध्यम से महसूस किया जा सकता है – और वह हमें उन सभी के साथ उपस्थिति रहने के लिए बुलाता है जो स्वयं को अंधकार में पाते हैं।

प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषिक्त किया और मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्त दूँ; कबिन्दियों के लिये स्वतंत्रता का और कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करूँ; कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूँ; कि सब वलाप करनेवालों को शांत दूँ। (यशायाह 61:1-2)

इसलिए आइए हम प्रार्थना करें कि यदि हमारे पाँचों में से कोई भी अंधकार में डूब जाए, तो हम उस दौरान उनके साथ रहें, पवित्र आत्मा की उपस्थिति को साझा करते हुए।



## अनुग्रह की आत्मा

रूत 1:16-18

*16* रूत बोली, “तू मुझे से यह वनिती न कर, कमुझे त्याग या छोड़कर लौट जा; क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊँगी; जहाँ तू टकें वहाँ मैं भी टकिँगी; तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा; *17* जहाँ तू मरेगी वहाँ मैं भी मरूँगी, और वहीं मुझे मट्टि दी जाएगी। यदमृत्यु छोड़ और किसी कारण मैं तुझ से अलग होऊँ तो यहोवा मुझ से वैसा ही वरन् उससे भी अधिक करे।” *18* जब उसने यह देखा कविह मेरे संग चलने को स्थरि है, तब उसने उससे और कुछ न कहा।

मुझे लगता है करित के लिए ये शब्द कहना आसान नहीं था। इसका मतलब था मोआब में अपना घर, अपना बड़ा परिवार, और अब तक उसने अपने जीवन में जो कुछ भी जाना था, सब कुछ छोड़ना।

यह भी कहना ज़रूरी है कि किसी दूसरे व्यक्ति के

प्रतिपूरी तरह समर्पित होना हमेशा आसान नहीं होता, यहाँ तक कि हमारे सबसे अच्छे दिनों में भी – और ऐसा करना तब और भी मुश्किल हो जाता है जब हमें दूर धकेला जा रहा हो। क्योंकि रूत के साथ ऐसा ही व्यवहार किया जा रहा था।

नाओमी स्पष्ट रूप से गहरे दुख से गुजर रही थी।

उसने अपने पति और दोनों बेटों को खो दिया था। वह दोबारा शादी करने के लिए बहुत बूढ़ी हो चुकी थी। और तो और, वह और बच्चे पैदा करने की सोच भी नहीं सकती। और उसे विश्वास हो गया था कि ईश्वर उसके वरिद्ध हो गया है। उसने अपना नाम भी बदल लिया नाओमी (जसिका अर्थ है सुखद) से मारा (जसिका अर्थ है कड़वा): ‘मुझे मारा कहो, क्योंकि सर्वशक्तमिान ने मेरा जीवन बहुत कड़वा बना दिया है।’ [...] मुझे नाओमी क्यों कहते हो? प्रभु ने मुझे दुख दिया है; सर्वशक्तमिान ने मुझ पर वपित्ता डाली है।’ (रूत 1:20-21)

उसने अपने सबसे करीबी लोगों को भी दूर कर दिया, जैसा कि हम सभी नरिशा की गहराई में डूबे होने पर कर सकते हैं – लेकिन रूत ने इसे समझ लिया और उसे छोड़ने से इनकार कर दिया। रूत अनुग्रह की आत्मा से परिपूर्ण थी।

नाओमी के प्रति उसके प्रेम में, हम ईश्वर के हमारे प्रति निश्रित प्रेम की झलक देख सकते हैं। यीशु मसीह के माध्यम से, परमेश्वर ने मानवजाति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की, और

हमसे कहा, ‘तुम जहाँ जाओगे, मैं भी वहीं जाऊँगा; तुम जहाँ मरोगे, मैं भी वहीं मरूँगा।’ और वह आज भी हमारे साथ है, हम जहाँ भी जाएँ, हमारे जीवन के आरंभ से अंत तक, अपने पवतिर आत्मा के माध्यम से।

फरि भी, हम दिन-प्रतिदिन उससे दूर होते जा रहे हैं अपने विचारों और शब्दों से, अपने कार्यों और अकार्यों से – यह नाओमी के रूत से दूर होने से कहीं अधिक है लेकिन हर दिन वह पवतिर आत्मा के द्वारा स्वयं को हमारे प्रति समर्पित करता है। और यही अनुग्रह है: अयोग्य, बना शर्त कृपा।

नाओमी को अनुग्रह की आवश्यकता थी। यही ...

इसलिए आइए हम प्रार्थना करें कि अनुग्रह की आत्मा हमें दिखाए – यहाँ तक कि जब (या विशेष रूप से जब) यह कठिन हो – कि हम अपने पाँचों के प्रति कैसे अनुग्रहपूर्ण रहें, कैसे स्वयं को उनके कल्याण के लिए समर्पित करें, और हम सभी के लिए ईश्वर के निश्रित प्रेम की गवाही दें।



# सुनने की भावना

## 1 शमूएल 3:1-11

<sup>1</sup> वह बालक शमूएल एली के सामने यहोवा की सेवा टहल करता था।  
 उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था; और दर्शन कम मलिता था।  
<sup>2</sup> और उस समय ऐसा हुआ कि (एली की आँखें तो धुँधली होने लगी थीं  
 और उसे न सूझ पड़ता था) जब वह अपने स्थान में लेटा हुआ था,  
<sup>3</sup> और परमेश्वर का दीपक अब तक बुझा नहीं था, और शमूएल यहोवा  
 के मन्दिर में जहाँ परमेश्वर का सन्दूक था लेटा था; <sup>4</sup> तब यहोवा ने  
 शमूएल को पुकारा; और उसने कहा, “क्या आज्ञा!” <sup>5</sup> तब उसने  
 एली के पास दौड़कर कहा, “क्या आज्ञा, तू ने तो मुझे पुकारा है।” वह  
 बोला, “मैंने नहीं पुकारा; फरि जा लेट रहा।” तो वह जाकर लेट गया।  
<sup>6</sup> तब यहोवा ने फरि पुकार के कहा, “हे शमूएल!” शमूएल उठकर एली  
 के पास गया, और कहा, “क्या आज्ञा, तू ने तो मुझे पुकारा है।” उसने  
 कहा “हे मेरे बेटे, मैंने नहीं पुकारा; फरि जा लेट रहा।” <sup>7</sup> उस समय तक  
 शमूएल यहोवा को नहीं पहचानता था, और न यहोवा का वचन ही उस  
 पर प्रगट हुआ था। <sup>8</sup> फरि तीसरी बार यहोवा ने शमूएल को पुकारा।  
 और वह उठके एली के पास गया और कहा, “क्या आज्ञा, तू ने तो  
 मुझे पुकारा है।” तब एली ने समझ लिया कि इस बालक को यहोवा ने  
 पुकारा है। <sup>9</sup> इसलिये एली ने शमूएल से कहा, “जा लेट रह; और यदविह  
 तुझे फरि पुकारे, तो तू कहना, हे यहोवा कह, क्योंकि तैरा दास सुन रहा  
 है।” तब शमूएल अपने स्थान पर जाकर लेट गया। <sup>10</sup> तब यहोवा आ  
 खड़ा हुआ, और पहले के समान पुकारा, “शमूएल! शमूएल!” शमूएल ने  
 कहा, “कह, क्योंकि तैरा दास सुन रहा है।” <sup>11</sup> यहोवा ने शमूएल से कहा,  
 “सुन, मैं इस्राएल में एक ऐसा काम करने पर हूँ जिससे सब सुननेवालों  
 पर बड़ा सन्नाटा छा जाएगा।”

आपको कहाँ प्रार्थना करना सबसे अच्छा लगता है?

क्या यह तब होता है जब आप चर्च में होते हैं, या जब आप प्रकृति के बीच टहल रहे होते हैं, या शायद जब आप घर पर, बसिटर पर, पूरण शांति में होते हैं?

हम सभी के पास उस रेडियो फ्रीक्वेंसी से जुड़ने के अपने-अपने तरीके होते हैं, जो हमारे लिए काम करती है और हमें ईश्वर के वचन को सुनने में सक्षम बनाती है।

मेरे लिए, यह मेरे घर की एक ऐसी जगह है जहाँ मैं हर सुबह प्रार्थना करने, बाइबल पढ़ने, सुबह की प्रार्थना करने, या बस शांत रहने के लिए जाता हूँ। लेकिन इससे भी बढ़कर, यह सब एक लय के बारे में है – एक ऐसी नियमिति दिनचर्या, जो परमेश्वर को बोलने के लिए जगह और समय देती है, और मेरी आत्मा को सुनने का अवसर देती है।

सैमुअल के लिए, ऐसा लगता है कि उन्हें लेटे हुए होना जरूरी था—शायद रात का समय होना जरूरी था—और—इसमें कोई हैरानी की बात नहीं—'होली ऑफ़ होलीज़' (परम पवतिर स्थान) में होना, जहाँ 'आरक ऑफ़ द कोवेनेंट' (पवतिर संदूक) रखा था, उनके लिए काफ़ी कारगर भी साबित हुआ।

लेकिन जब सैमुअल ने आत्मा की आवाज़ सुनी, तो उसे समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है, या वह गलत तरीके से जवाब क्यों दे रहा था – ऐसा लग रहा था मानो वह एक ऐसे वॉकी-टॉकी का इस्तेमाल कर

रहा हो जो अलग-अलग फ्रीक्वेंसी पर सगिनल लेता और भेजता हो – और उसे शायद ऐसा महसूस हुआ होगा जैसे वह किसी मज़क का शिकार बन गया हो। लेकिन उसे कुछ महत्वपूर्ण सलाह मल्लि।

बाइबल की इस कृतिब में एली का चरित्र बहुत अच्छा नहीं हुआ है, लेकिन इस कहानी में वह एक अमूल्य भूमिका निभाते हैं। उन्होंने सैमुअल को सिखाया कि आत्मा की आवाज़ कैसे सुनें: वापस अपनी मूल जगह पर लेट जाएँ—सही रेडियो फ्रीक्वेंसी पर ट्यून करें—और सही तरीके से जवाब दें। असल में, उन्होंने उसे यह समझने में मदद की कि प्रार्थना कैसे की जाती है।

मैं सोचता हूँ कि अगर हमारे 'पाँच' को भी वैसी ही कोई आवाज़ सुनाई देती, जैसी सैमुअल को सुनाई दी थी—तो क्या वे पहचान पाते कि वह कौन था या क्या था, या फरि उसका जवाब कैसे देना है?

क्योंकि हो सकता है कि आज परमेश्वर उन्हें पुकार रहा हो – बल्कि, मुझे पूरा यकीन है कि वह पुकार रहा है – और अब यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम एली की भूमिका निभाएँ।

तो आइए हम प्रार्थना करें कि हम अपने 'पाँच' लोगों की उस पुकार को ठीक वैसे ही सुनने में मदद कर सकें जैसी वह असल में है, और उन्हें उसे सुनने के लिए प्रोत्साहित करें – क्योंकि, सैमुअल की तरह ही, उसे सुनना उनकी ज़िंदगी बदल देगा।



## आत्मवश्वास की भावना

### न्यायियों 6:11-14

<sup>11</sup> फरि यहोवा का दूत आकर उस बांजवृक्ष के तले बैठ गया, जो ओप्रा में अबीएजेरी योआश का था, और उसका पुत्र गदिन एक दाखरस के कुण्ड में गेहूँ इसलिये झाड़ रहा था कि उसे मद्यानियों से छपा रखे। <sup>12</sup> उसको यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, “हे शूरवीर सूरमा, यहोवा तेरे संग है।” <sup>13</sup> गदिन ने उससे कहा, “हे मेरे प्रभु, वनिती सुन, यद्यहोवा हमारे संग होता, तो हम पर यह सब वपित्ता क्यों पड़ती? और जतिने आशुचर्यकरमों का वर्णन हमारे पुरखा यह कहकर करते थे, ‘क्या यहोवा हम को मसिर से छुड़ा नहीं लाया,’ वे कहाँ रहे? अब तो यहोवा ने हम को त्याग दिया, और मद्यानियों के हाथ कर दिया है।” <sup>14</sup> तब यहोवा ने उस पर दूर्षुटिकरके कहा, “अपनी इसी शक्त पर जा और तू इस्राएलियों को मद्यानियों के हाथ से छुड़ाएगा। क्या मैं ने तुझे नहीं भेजा?”

‘यदि प्रभु हमारे साथ है, तो यह सब हमारे साथ क्यों हुआ?’

मुझे लगता है कि इसे पढ़ने वालों में ऐसे लोग भी होंगे, जो गदिन जैसा ही सवाल पूछ रहे होंगे।

यह पूरी तरह से समझ में आता है कि गदिन को क्यों लगा होगा कि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है; उसे परमेश्वर के प्रतीतिना रोष क्यों महसूस हुआ होगा; और उसने यह क्यों पूछा होगा कि परमेश्वर के वे सारे चमत्कार कहाँ चले गए, और वह आज उन्हें

फरि से क्यों नहीं कर सकता।

और यह समझना मुमकिन है कि आज भी कभी-कभी हमें वैसा ही क्यों महसूस हो सकता है।

ऐसी स्थितियों में, जब हमें नरिशा महसूस होती है और लगता है कि मदद के लिए हम कुछ भी नहीं कर सकते, तो हम चाहते हैं कि ईश्वर हमारे लिए सब ठीक कर दे। लेकिन इसके बजाय ईश्वर हमसे क्या कहता है (तब भी – या शायद वशिष रूप से तब – जब हम उससे नाराज़ होते हैं)?

‘अपनी पूरी शक्त के साथ जाओ... क्या मैं तुम्हें नहीं भेज रहा हूँ?’

वह हमें वह करने के लिए भेजता है, जो हम उससे करवाना चाहते।

कैसर वार्ड में एक नर्स के तौर पर, मैंने ऐसी जगह काम किया जहाँ लोग अक्सर खुद को सबसे ज्यादा बेबस महसूस करते हैं। यहाँ सचमुच कोई भी सांसारिक समाधान नहीं है, और लोग अक्सर पूछते हैं, ‘क्यों?': परमेश्वर का परमेश्वर ऐसी पीड़ा की अनुमति क्यों देता है, और, यद्यीशु ने कोढ़ी को चंगा किया था, तो वह मुझे चंगा क्यों नहीं कर सकता?

लेकिन भले ही हालात नरिशाजनक लगें, यह एक ऐसी जगह भी है जहाँ कुछ असाधारण घटित हो

सकता है।

यह एक ऐसी जगह है, जहाँ भले ही कोई शारीरिक इलाज न हो, भले ही हमारे पास सभी सवालों के जवाब न हों, फरि भी हम लोगों के साथ कदम से कदम मलाकर चल सकते हैं—जब वे नरिशा से उबर रहे हों—और उन्हें जीवन को उसकी पूरी भव्यता के साथ जीने में मदद कर सकते हैं। हम उनके दुख-तकलीफ़ में उनके साथ रह सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे ईश्वर हमारे साथ रहते हैं।

आज, हो सकता है कि हमें अपने 'पाँच' लोगों के लिए उम्मीद कम लगे, और हमें लगे कि उन्हें परमेश्वर के करीब लाने के लिए हम कुछ भी नहीं कर सकते—लेकिन पवतिर आत्मा हमें नरिशा न होने का संदेश देती है। वह हमसे यह नहीं कहते कि हम ईश्वर के कदम उठाने का इंतज़ार करें, बल्कि वह हमें हमारी अपनी शक्त के साथ आगे भेजते हैं—और हमसे कहते हैं कि हम वह सब करें जो हम कर सकते हैं; क्योंकि—चाहे हम इस बात को मानें या न मानें—‘प्रभु हमारे साथ हैं।’

तो आइए हम प्रार्थना करें कि हम कार्य करने में असफल न हों, बल्कि उस आत्मा के आह्वान का पूरे आत्मवश्वास के साथ जवाब दें, जो हमें हमारे 'पाँच' लोगों के पास भेज रही है। क्योंकि ईश्वर हमारे ही माध्यम से—हमारी ही शक्त में—कार्य करेगा।



## आत्मा और फुसफुसाहट

### 1 राजाओं 19:9b-13

<sup>9</sup>वहाँ वह एक गुफा में जाकर टिका और यहोवा का यह वचन उसके पास पहुँचा, “हे एलियाह, तेरा यहाँ क्या काम?”<sup>10</sup> उसने उत्तर दिया, “सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के नमित्त मुझे बड़ी जलन हुई है, क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी, तेरी वेदियों को गरी दया, और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है, और मैं ही अकेला रह गया हूँ; और वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं।”<sup>11</sup> उसने कहा, “नकिलकर यहोवा के समुख परवत पर खड़ा हो।” और यहोवा पास से होकर चला, और यहोवा के सामने एक बड़ी प्रचण्ड आँधी से पहाड़ फटने और चट्टानें टूटने लगीं, तौभी यहोवा उस आँधी में न था; फरि आँधी के बाद भूकम्प हुआ, तौभी यहोवा उस भूकम्प में न था।<sup>12</sup> फरि भूकम्प के बाद आग दरिवाई दी, तौभी यहोवा उस आग में न था; फरि आग के बाद एक दबा हुआ धीमा शब्द सुनाई दिया।<sup>13</sup> यह सुनते ही एलियाह ने अपना मुँह चद्दर से ढाँपा, और बाहर जाकर गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ। फरि एक शब्द उसे सुनाई दिया, “हे एलियाह, तेरा यहाँ क्या काम?”

मुझे आपके बारे में तो नहीं पता, लेकिन मुझे तो एलीजा का जवाब काफ़ी सही लग रहा है!

ईश्वर ने उससे पूछा था कविह वहाँ क्यों है, और उसने एक ईमानदार और बहुत ही समझदारी भरा

जवाब दिया। मुझे हैरानी नहीं होगी अगर ऐसी स्थिति में कोई छपि न जाए।

लेकिन साफ़ तौर पर, परमेश्वर चाहते थे कि एलियाह दोबारा सोचे।

तो एलियाह से बाहर जाने को कहा जाता है – वह पहाड़ों को फटते हुए, अपने पैरों के नीचे धरती को कांपते हुए, और एक भयंकर आग की लपटों को देखता है – यह सब कुछ होने के बाद भी, आत्मा लौटकर उसके कानों में ठीक वही सवाल फुसफुसाती है।

यह सैमुअल और एली की कहानी जैसा नहीं है। एलियाह को परमेश्वर से बातचीत करने में कोई दक्कित नहीं है—वह उनकी आवाज़ साफ़-साफ़ सुन सकता है, उन्हें समझ सकता है और उन्हें जवाब भी दे सकता है—और परमेश्वर इसी का इस्तेमाल करके उसे नया रूप दे रहे हैं।

क्योंकि परमेश्वर जानकारी नहीं माँग रहे थे — उन्हें पहले से ही पता था कि एलियाह वहाँ क्यों थे।

यह एक अलंकारिक प्रश्न था, जो एलियाह से कह रहा था कविह बहाने बनाना छोड़ दे, छपिकर रहना बंद करे और कार्रवाई करे।

आखरिकार एलाइजा को इशारा समझ आ जाता है।

मैं सोचता हूँ—वह कौन-सा सवाल है जिसका जवाब हममें से हर किसी को बार-बार देना पड़ रहा है?

मेरे लिए, बात हमेशा यही रही है कि क्या मैं उन कृपमताओं का, जो ईश्वर ने मुझे दी हैं, सर्वोत्तम उपयोग कर रहा हूँ।

शायद आपके साथ भी ऐसा ही हो, या हो सकता है कि आपके 'पाँच' लोगों से जुड़ा कोई सवाल आपके मन में बार-बार उठ रहा हो – कि मैंने उनसे विश्वास के बारे में बात क्यों नहीं की? मैंने उन्हें चर्च आने का न्योता क्यों नहीं दिया? – क्योंकि, अगर यह सवाल बार-बार मन में आ रहा है, तो हम जानते हैं कि इसके पीछे परमेश्वर का कोई न कोई कारण ज़रूर होगा!

तो आइए हम प्रार्थना करें कि आत्मा हमसे जो भी प्रश्न पूछ रही है—विशेषकर यदविह हमारे 'पाँच' से जुड़ा है—तो हम उसका उत्तर ठीक वैसे ही दें जैसा परमेश्वर चाहते हैं: उसे नज़रअंदाज़ न करें, उसे दबाएँ नहीं, न ही कोई बहाना बनाएँ—बल्कि किर्म करके उसका जवाब दें।



# आत्मा और नेतृत्व

## न्यायियों 4:3-5

<sup>3</sup>तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी; क्योंकि सीसरा के पास लोहे के नौ सौ रथ थे, और वह इस्राएलियों पर बीस वर्ष तक बड़ा अन्धेर करता रहा। <sup>4</sup> उस समय लप्पीदोत की स्त्री दबोरा, जो नबिया थी, इस्राएलियों का न्याय करती थी। <sup>5</sup> वह एप्रैम के पहाड़ी देश में रामा और बेतेल के बीच में दबोरा के खजूर के तले बैठा करती थी, और इस्राएली उसके पास न्याय के लिये जाया करते थे।

आपने शायद यह गौर किया होगा कि जब हम प्रार्थना करते हैं, तो उसके जवाब हमेशा वैसे नहीं मिलते, जैसी हम उम्मीद करते हैं। ज़रूरी नहीं कि हम भी शमूएल या एलियाह की तरह ही परमेश्वर की

आवाज़ सुनें—

इसके बजाय, हम पाते हैं कि पवित्र आत्मा किसी और के ज़रिए काम कर रही है और बोल रही है, और

उन्हीं से हमें मार्गदर्शन मिलता है।

इस कहानी में, इस्राएली लोग परमेश्वर से मदद के लिए गुहार लगा रहे थे, और उन्होंने यह पहचान लिया कि पवित्र आत्मा डेबोरा के माध्यम से उनसे बात कर रही है; इसलिए उन्होंने नेतृत्व के लिए उसी की ओर देखा।

डेबोरा इस्राएल पर अपना नेतृत्व थोपती नहीं है। वह बस अपना डेरा डाल लेती है, और हर उस इस्राएली के लिए उपलब्ध रहती है जिसे उसकी ज़रूरत हो, और वह उनकी सेवा करती है। ठीक वैसे ही, जैसे पिता हमेशा हमारे लिए मौजूद रहते हैं—जब भी हम प्रार्थना करना चाहते हैं। और ठीक वैसे ही, जैसे पुत्र इसलिए नहीं आया था कि उसकी सेवा की जाए, बल्कि इसलिए आया था कि वह सेवा करे।

सभी सेवकों की तरह, मैं भी इस आध्यात्मिक नेतृत्व को दर्शाने का प्रयास करता हूँ—अपनी मर्जी थोपने के बजाय, दूसरों में छिपी सर्वश्रेष्ठ क्षमताओं को बाहर लाने की कोशिश करता हूँ। दूसरों की सेवा करके, उन्हें सक्षम बनाकर, उनमें

आत्मविश्वास जगाकर और उनकी ईश्वर-प्रदत्त प्रतभाओं को उजागर करके नेतृत्व करना।

हमारे स्थानीय चर्चों में, हम सभी के पास ऐसे अगुवे हैं जिन्होंने हमारे नज़दीक ही अपना डेरा जमा रखा है—सेवक और पादरी, जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं, और जो हमारी सेवा करने, हमारा मार्गदर्शन करने और हमारे भीतर की सर्वश्रेष्ठ क्षमताओं को बाहर लाने के लिए वहाँ मौजूद हैं।

तो आइए, हम उन्हें खोजें—ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन इस्राएलियों ने डेबोरा को खोजा था—क्योंकि जब हम अपने 'पाँच' लोगों को विश्वास की ओर लाने का तरीका ढूँढ़ने की कोशिश करेंगे, तो हो सकता है कि हमें यह अनुभव हो कि पवित्र आत्मा उन्हीं के माध्यम से हमसे बात कर रही है।

आइए, हम अपने चर्च के अगुवे—चाहे वे आम सदस्य हों या पादरी—के लिए प्रार्थना करें, कि वे स्वयं पवित्र आत्मा की आवाज़ सुनकर, हमें अपने 'पाँच' लोगों के साथ परमेश्वर का प्रेम बाँटने में सहायता करें।



## सार्वभौमिकता की आत्मा

### मत्ती का सुसमाचार 3:13-17

<sup>13</sup> तब यीशु गलील से यरदन के पास यूहन्ना के पास उससे बपतस्मा लेने आए। <sup>14</sup> परन्तु यूहन्ना ने उन्हें रोकने का प्रयास करते हुए कहा, “मुझे आपसे बपतस्मा लेने की आवश्यकता है, और क्या आप मेरे पास आते हैं?”

<sup>15</sup> यीशु ने उत्तर दिया, “अब ऐसा ही होने दो; क्यों कहिंमारे लिये सब प्रकार की धार्मिकता को पूरा करना उचित है।” तब यूहन्ना मान गया।

<sup>16</sup> जैसे ही यीशु ने बपतस्मा लिया, वे तुरन्त पानी में से ऊपर आए। उसी समय स्वर्ग खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और उन पर ठहरते देखा। <sup>17</sup> और स्वर्ग से एकवाणी आई, “यह मेरा प्रियपुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।”

यदि कोई एक शब्द है जो इस कहानी को परभाषित करता है, तो वह है – नम्रता।

क्रिसमस पर, सृष्टिकर्ता ने स्वयं को दीन किया, केवल अपनी सृष्टिका भाग बन कर ही नहीं, बल्कि अत्यन्त दीनता में उस में प्रवेश कर के, एक अस्तबल में जन्म ले कर और पशुओं की नांद में रखे जा करागुडफ्राइ डे पर उन्होंने केवल मृत्यु सहकर स्वयं को दीन नहीं किया, जैसे उन की सृष्टि करती है, बल्कि उन्होंने स्वयं को सार्वजनिक रूप से अपमानित होने दिया, क्रूस की यातना में। और यहाँ उन के बपतस्मा में, उन्होंने स्वयं को अपनी ही सृष्टि द्वारा बपतस्मा लेने दिया – मानो वे भी अपनी सृष्टि के समान पापी हों।

यद्यिह सत्य न होता तो यह अवशिवसनीय लगता। और यह केवल एक संकेत मात्र नहीं है – नम्रता उनकी सृष्टि पर सार्वभौमिकता के मूल में है। क्यों कि बपतस्मा के लिये स्वयं को समर्पित करने के बाद ही सार्वभौमिकता की आत्मा यीशु पर उतरती है, और उन्हें परमेश्वर का पुत्र घोषित करती है। मसीह हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर में सार्वभौमिकता और नम्रता वरिधाभासी रूप से एक ही है। मसीही

होने के नाते हमें भी इसी नम्रता की गवाही देनी चाहिए, क्यों कि मसीह की तरह हमें भी दूसरों की सेवा करने के लिये बुलाया गया है।

एक नर्स के रूप में, एक याजक के रूप में, और केवल एक मसीही के रूप में, मुझे दूसरों के पैर धोने के लिये बुलाया गया है। यीशु ने अपने चेलों के पैर धोए, और वे हमें भी दूसरों के लिये ऐसा ही करने को बुलाते हैं – और इस में हमारे “पांच” भी सम्मिलित हैं। चाहे हम सचमुच पैर धोएँ या रूप कर्प में, उस के मूल में यह सेवा और देखभाल का प्रतीक है – परन्तु सब से बढ़ कर नम्रताका। हमारी नम्रता ही आत्मा को हम पर उतरने लाएगी, क्यों कि “जो अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।” (मत्तीकासुसमाचार 23:12)

और इस लिये आइए प्रार्थना करें कि सार्वभौमिकता की आत्मा हमें सच्ची नम्रता प्रदान करे, और हम अपने “पांच” की सेवा सेवक के हृदय से करें, जैसे मसीह ने हमारी सेवा की।



## सुसमाचार प्रचार की आत्मा

### प्रेरितों के काम 8:26-35

[...] <sup>29</sup> आत्मा ने फलिपिपुस से कहा, “उस रथ के पास जा और उस के नकिट रहा।”

<sup>30</sup> तब फलिपिपुस दौड़ कर रथ के पास पहुँचा और उस मनुष्य को भवषियद्वक्ता यशायाह को पढ़ते सुना। फलिपिपुस ने पूछा, “क्या तू समझता है कि जो पढ़ रहा है वह क्या है?”

<sup>31</sup> उस ने कहा, “जब तक कोई मुझे न समझाए, मैं कैसे समझसकता हूँ?” तब उसने फलिपिपुस से वनिती की कि ऊपर आकर उस के साथ बैठे। [...]

प्रतदिनि हम नए लोगो से मलिते है। हम उन सब को नमस्ते नहीं कहते और बातचीत प्रारम्भ नहीं करते – यदि ऐसा करें, तो कुछ भी कर पाना असम्भव हो जाएगा! परन्तु मैं सोचता हूँ कि शायद यही वास्तविक कारण नहीं है कि हम चुप रहते हैं।

मुझे लगता है कि केवल एक नए व्यक्त के सामने स्वयं को प्रस्तुत करना भी कठिन हो सकता है। और भी अधिक तब, जब वे हम से भिन्न प्रतीत हों। यदि देखने में बहुत कम समानता हो, तो केवल नमस्ते कहना भी कठिन हो सकता है, सीधे उनके

पास दौड़कर यह पूछना तो और भी कठिन कवि क्या पढ़ रहे हैं।

परन्तु फलिपिपुस ने ठीक यही किया। उसने शायद सोचा होगा, “मेरे जैसा गलील के एक मछुआरो के गाँव का साधारण व्यक्ति, दूर इथियोपिया से आए एक राजकीय अधिकारी और खोजे से कैसे जुड़ सकता है?” परन्तु आत्मा के पास उत्तर था: बस वहाँ जाओ, और देखो क्या होता है। एक बात से दूसरी बात नकिली, और फलिपिपुस उस व्यक्ति को यशायाह की भवषियवाणी के गहरे अर्थ समझाने लगा। आज हम बहुत बात करते हैं कि मिसीह के राजदूतों के रूप में और अधिक प्रभावी कैसे बनें।

परन्तु इस कहानी में आत्मा हमें एक ऐसी बात स्मरण कराती है जो इतनी स्पष्ट लगती है कि भानो कहने योग्य ही नहीं: यदि हम बातचीत में सम्मिलित ही नहीं होंगे, तो परमेश्वर के वषिय में नहीं बोल सकते। आत्मा फलिपिपुस को यह नहीं बताती कि उस व्यक्ति से कैसे बात करनी है (यद्यपि फलिपिपुस शायद इसे सुनकर प्रसन्न होता)। पवित्र आत्मा हमें वे बातें नहीं बताती जो हम सोचते हैं कि हमें सुननी चाहिए। इस के स्थान पर केवल एक स्पष्ट निर्देश है: “उस रथ के पास जा और उस के

नकिट रहा।” परमेश्वर फलिपिपुस पर भरोसा करते हैं कि वह आगे की बात स्वयं संभाल लेगा।

आज आत्मा हमें भी ऐसा ही करने के लिये बुला रही है। हर उस व्यक्ति से बात करने के लिये नहीं जिस से हम मलिते हैं – सब कुछ हमारे कंधों पर नहीं है, आखिरकार हम एक दल का भाग हैं, अर्थात् कलीसिया – परन्तु परमेश्वर कम से कम हमें अपने “पांच” से बात करने के लिये बुला रहे हैं। सम्भव है वे हमें यह न बता रहे हों कि क्या कहना है या कैसे कहना है – वे केवल चाहते हैं कि हम बातचीत प्रारम्भ करें। और क्यों किये हमारे मति और परिवार हैं, यह हमारे लिये फलिपिपुस की अपेक्षा आसान होगा – यद्यपि शायद हम इतने भाग्यशाली नहीं कि उन्हें यशायाह पढ़ते हुए पाएँ!

और इसलिए आइए प्रार्थना करें कि आत्मा की बुलाहट को सुनने और उस का उत्तर देने का साहस हमें मलि – कि हम स्वयं को आगे रखें, और अपने “पांच” के साथ बातचीत प्रारम्भ करें, चाहे हम स्वयं को तैयार न महसूस करें। क्यों कि परमेश्वर हम पर भरोसा करते हैं कि आगे की बात हम सम्भाल लेंगे।



## सब युगों के लिये आत्मा

### २ तमोथीयुस 1:3-7

<sup>3</sup> मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, जिसकी सेवा मैं अपने पूर्वजों की तरह शुद्ध वविक से करता हूँ, और रात दिन अपनी प्रार्थनाओं में तुझे नरिन्तर स्मरण करता हूँ। <sup>4</sup> तेरे आँसुओं को स्मरण करके मैं तुझ से मलिन की लालसा रखता हूँ, ताकि मैं आनन्द से भर जाऊँ। <sup>5</sup> मुझे तेरे नषिकपट विश्वास की याद आती है, जो पहले तेरी नानी लोइस और तेरी माता यूनीकेमेंथा, और मुझे विश्वास है कि अब तुझमें भी है।

<sup>6</sup> इसी कारण मैं तुझे स्मरण दिलाता हूँ कि परमेश्वर के उस वरदान को प्रज्वलति कर, जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझमें है। <sup>7</sup> क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं, परन्तु सामर्थ्य, प्रेम और संयम की आत्मा दी है।

कुछ वर्ष पहले, मैं एक शल्य-चिकित्सा के लिये अस्पताल में था। यद्यपि मैंने दशकों तक एक नर्स के रूप में कार्य किया था, मैं कभी रोगी नहीं बना था, और नहीं कभी मुझे सामान्य बेहोशी की दवा दी गई थी। शांत और आत्म विश्वासी होने के स्थान पर मैं चिन्तित और भयभीत था। जब मैं वहाँ लेटा था और मुझे बेहोश किये जाने की प्रतीक्षा कर रहा था, तब मैं केवल यही चाहता था कि कोई मेरा हाथ पकड़ले। इससे जोखिम कम मन ही होता, नहीं मैं तुरन्त अच्छा हो जाता, परन्तु इससे यह अनुभव होता कि मैं अकेला नहीं हूँ।

हम सब जानते हैं कि अकेलापन क्या होता है। अलग-थलग महसूस करना (यहाँ तक कि जब हम अन्य लोगों से घरे हों) और व्यक्तिगत सम्बन्ध की लालसा रखना।

मुझे लगता है कि पौलुस भी कुछ ऐसा ही अनुभव कर रहा था। वह यह पत्र जेल में लिख रहा था – सम्भवतः अपने शहीद होने से पहले लिखा गया उसका अन्तम पत्र – और तीमुथियुस से मलिन की उसकी लालसा स्पष्ट दिखाई देती है। मैं उसकी कल्पना कर सकता हूँ कि वह किसी आलगिनयाकम से कम हाथ थामने की इच्छा कर रहा हो। हम स्पर्श के महत्व को कम नहीं आँक सकते। क्योंकि स्पर्श उन तरीकों में से एक

है जिसे पवित्र आत्मा संसार में कार्य करती है।

जैसा पौलुस कहता है, आत्मा – परमेश्वर का वरदान – पौलुस के हाथ रखने के द्वारा तीमुथियुस तक पहुँची। और वह हम सब तक भी हमारे बपतस्मा में स्पर्श के माध्यम से पहुँची। स्पर्श के अद्भुत माध्यम से पवित्र आत्मा हममें बाँटी गई है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी, सब युगों तक, पौलुस के समय से आज तक और भविष्य में भी पहुँचती रहेगी। सब युगों की आत्मा – नरिाकार, का लातीत – समय और स्थान के एक छोटे से क्षण में हमारे पास आती है, जब हम एक-दूसरे को स्पर्श करते हैं।

और यदि सम्भव हो, तो हमें इसका वरदान अपने “पांच” के साथ भी बाँटना चाहिए – वे लोग जिन्हें, पौलुस की तरह, हम अपनी प्रार्थनाओं में नरिन्तर स्मरण करते रहे हैं।

और इसलिए आइए प्रार्थना करें कि जब भी हमारे “पांच” स्वयं को अकेला महसूस करें, तब हम उनके लिये वहाँ उपस्थित हों – हाथ थाम कर, कंधे पर सान्त्वना भरा स्पर्श देकर, यागले लगाकर, जैसा उचित और स्वी कार्य हो – और इस प्रकार उनके साथ पवित्र आत्मा की सान्त्वना साझा करें।



# पन्तिकुस्त प्रतज्जा की आत्मा

## प्रेरितों के काम 2:1-4

<sup>1</sup>जब पन्तिकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक ही स्थान पर एकत्र थे। <sup>2</sup>अचानक स्वर्ग से प्रचण्ड आँधी के समान एक शब्द हुआ और उस सारे घर को भर दिया जहाँ वे बैठे थे। <sup>3</sup>और उन्हें आग की सी जी भें दिखाई दी, जो अलग-अलग होकर उनमें से प्रत्येक पर ठहर गई। <sup>4</sup>और वे सब पवत्रिआत्मा से भर गए और अन्य भाषाओं में बोलने लगे, जैसा आत्मा उन्हें बोलने की सामर्थ्य देती थी। “आओ, हे पवत्रिआत्मा, हमारी आत्माओं को प्रेरित करो और स्वर्गीय अग्नि से प्रकाशित करो...”

यह प्राचीन भजन राजा चार्ल्स III के राज्याभिक में गाया गया था, ठीक उस समय जब उनका तेल और पवत्रिआत्मा से अभिक कया गया। मूल

रूप से लैटिन में रचा गया यह भजन यूनाइटेड कगिडम की देशी भाषाओं (अंग्रेजी, वेल्श, स्कॉट्सगेलिक और आयरिश) में गाया गया, जो उस प्रथम

पन्तिकुस्त पर प्रेरितों द्वारा बोली गई अनेक भाषाओं की समृद्धि है – और इसने आज एक नए पन्तिकुस्त की पुकार की।

वास्तव में, यह भजन 1625 से प्रत्येक ब्रिटिश राज्याभिक में गाया जाता रहा है, क्योंकि यह समझा गया है कि कोई भी सम्राट अपने बुलावे का भार अकेले नहीं उठा सकता – उसे उस सामर्थ्य की आवश्यकता होती है जो केवल सामर्थ्य की आत्मा से मलित सकती है। और हमें भी अपने सामने रखे गए कार्यों के लिये उसी सहायता की आवश्यकता है – विशेष कर अपने “फाइव” के साथ परमेश्वर के प्रेम को साझा करने के लिये।

इसी के लिये हम पछिले ग्यारह दिनों से प्रार्थना कर रहे हैं – कि हमारे “पांच” परमेश्वर का अनुभव करें, और हमारे माध्यम से करें।

हमारी उस हमिमत के द्वारा जिससे हम बातचीत प्रारम्भ करें, चाहे हम स्वयं को तैयार न महसूस करें।

हमारी नम्रता के द्वारा, जिससे हम सेवक के हृदय से उनकी सेवा करें।

हमारी सान्त्वना के द्वारा, जब वे स्वयं को अन्ध कारया अकेलेपन में पाएँ।

हमारी कृपा के द्वारा, जिससे हम उनके कल्याण के लिये प्रतबिद्ध रहें, चाहे यह कठिन ही क्यों न हो।

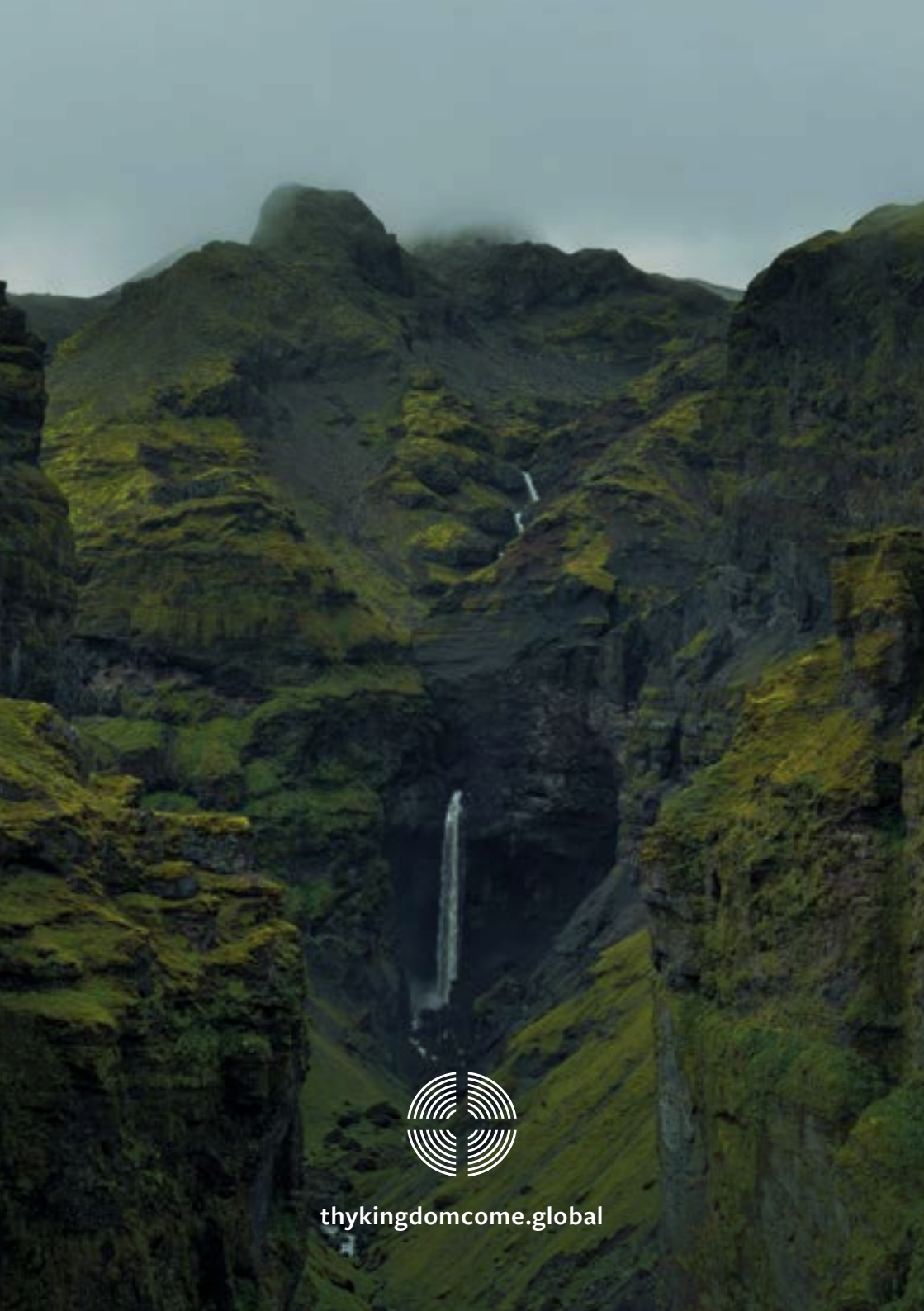
हमारे मार्ग दर्शन के द्वारा, जिससे हम उनकी सहायता करें कि वे परमेश्वर की बुलाहट को सुनें और समझें।

और सबसे बढ़ कर हमारे कार्यों के द्वारा, जिससे हम आत्मा की धीमी आवाज़ का उत्तर दें और स्वयं अपने “पांच” के साथ परमेश्वर का प्रेम साझा करें।

यदि हम वह सब करें जिसके लिये हम ने प्रार्थना की है, तो हमारे “पांच” केवल हमारे माध्यम से परमेश्वर का अनुभव ही नहीं करेंगे। हम स्वयं भी परमेश्वर का अधिक पूर्ण अनुभव करेंगे, और उनकी आत्मा के द्वारा कृपा, नम्रता, सान्त्वना, सुनने की क्षमता, आत्मवश्वास और प्रेम से भरे लोगों में परिवर्तित हो जाएँगे – ऐसे लोग जो और अधिक स्पष्ट रूप से परमेश्वर की सच्ची छवि को प्रतबिम्बित करें।

और इसलिए आइए प्रार्थना करें कि, उस प्रथम पन्तिकुस्त की तरह, हम भी पवत्रिआत्मा के द्वारा परिवर्तित हों, और मसीह के राजदूत बनने के योग्य बनाए जाएँ, ताकि हम अपने “पांच” के साथ परमेश्वर का प्रेम साझा कर सकें।





[thykingdomcome.global](http://thykingdomcome.global)